अवध के कन्हपुरिया क्षत्रिय राजवंश के जनक (राजा कान्ह) का संक्षिप्त इतिहास

भारत में स्वतंत्रता की प्राप्ति के पहले आधुनिक उत्तर प्रदेश के लखनऊ उन्नाव, रायबरेली, सुलतानपुर, प्रतापगढ़, फैजाबाद, गोण्डा, बाराबंकी, बहराइच, सीतापुर लखीमपुर–खीरी, हरदोई, जिलों का भू–भाग 'अवध' प्रान्त के नाम से विख्यात था ।

कन्नौज के गहड़वालो के पतन के बाद झूँसी में चन्द्रवंशी क्षत्रियों की एक शाखा 'कान्हपुर' में स्थापित हुई थी। यह 'कान्हपुर' के संस्थापक महाराज कान्हदेव की पुण्य स्मृति में एवं कान्हपुर में निवास के कारण यह शाखा 'कन्हपुरिया क्षत्रिय' के नाम से विख्यात हुई। इस वंश के प्रतापी महाराजा कान्ह के वंशजो ने अवध क्षेत्र के सुलतानपुर, रायबरेली और प्रतापगढ़ जिलों में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पूर्व अवध में कन्हपुरिया क्षत्रिय वंश की सत्रह शाखाएं थी। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और मुस्लिम आक्रमणों से देश एवं धर्म की रक्षा हेतु कन्हपुरिया क्षत्रियों ने कई युद्ध लड़े थे ।

पुराणों के अनुसार जन्मेजय का उत्तराधिकारी शतानीक था, उसका पुत्र अश्वमेधदत्त हुआ। वायु एवं मत्स्य पुराण के प्रसिद्ध अधिसीम कृष्ण इसी अश्वमेधदत्त की सन्तान थे। अधिसीम कृष्ण का पुत्र निचक्षु था। महाभारत काल में इन चन्द्रवंशी क्षत्रियों की राजधानी हस्तिनापुर थी। महाराज निचक्षु के शासनकाल में यह गंगा नदीं के भीषण बाढ़ में बह गया। विष्णु पुराण से पता चला है कि अभिमन्यु पुत्र परीक्षित के पांचवी पीढ़ी में निचक्षु ने हस्तिनापुर के स्थान पर प्रयाग के समीप स्थित कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाया था। ऐतिहासिक काल महात्मा बुद्ध (563 से 483 ईसा पूर्व) के समय कौशाम्बी के शासक चन्द्रवंशी नरेश उदयन थे, उनके बाद वहीनर, दण्डपाणि बीरमित्र एंव क्षेमक आदि राजाओं ने शासन किया था। क्षेमक के शासन काल में कौशाम्बी राज्य का बहुत भाग मगध का एवं कुछ भाग अवन्ति के राजाओं ने जीत लिया, जिससे चन्द्रवंशी राजाओं का कुछ राज्य समाप्त हो गया ।

कौशाम्बी के चन्द्रवंशी क्षत्रिय कुछ समय तक पतनोन्मुख दशा में प्रयाग के समीपवर्ती क्षेत्रों में बने रहे। कन्नौज में गहड़वाल राज्य स्थापित हो जाने पर उनसे कर लिया, जो बाद में तेरहवीं शताब्दी ईसवी के प्रारम्भिक वर्षों में यहां से विस्थापित हो गया।

चन्द्रवंशी क्षत्रियों की राजधानी जब झूँसी में थी, तब उन्हें 'चन्द्रवंशी' या 'सोमवंशी' नाम से जाना जाता था। बाद में यहां से विस्थापित होने पर चन्द्रवशियों के एक समूह ने सोमवंशी नाम से प्रतापगढ़ में अपना राज्य स्थापित किया। जबकि इसी समय इस चन्द्रवंशी वंश के वीर पुरुष करनदेव पुत्र कान्हदेव स्वतंत्र राज्य स्थापित कर अपना वंश चलाया। क्षत्रियों में वंश प्रणाली प्रचलित थी। वे गोत्र की अपेक्षा वंश को अत्यधिक महत्व देते थे। वंश प्रणाली प्रचलित रहने के अनेक कारण थे। जहाँ भूमि आसानी से मिल जाती थी, वंश के टुकड़े हो जाते थे अर्थात् उनकी शाखा बन जाती थी। संम्भवतः इसीलिए चन्द्रवंशी क्षत्रियों की अनेक शाखाएं मिलती हैं (देखिए–डा0 रोमिला थापर– 'वंश से राज्य तक' पृष्ठ 37,52,53)।

कन्हपुरिया क्षत्रिय राजवंश प्राचीन चन्द्रवंशी क्षत्रिय की एक शाखा है। कुँवर शिवनाथ सिंह द्वारा लिखित ग्रंथ– शिवनाथ भास्कर (1923 ई0) के अन्त में वर्णित वंश उत्पत्ति चार्ट में उल्लिखित है कि चन्द्रवंशी काश के वंशजों गहरवार, राठौर, कन्हपुरिया एंव चन्देल क्षत्रिय वंश की उत्पत्ति हुई थी। इस तथ्य की पुष्टि अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थों से होती है। महाराज जयचन्द्र गहरवाड़ की सेना में झूँसी के चन्द्रवंशी करनदेव सेनापति थे। करनदेव ने शहाबुद्दीन गौरी के 1194 ई० आक्रमण का सामना करते हुए गोरी के सेनापति से भंयकर युद्ध किया था। जिसमें उनका सेनापति अब्दुल रहीम मारा गया था। इस युद्ध का वर्णन शिवराज अपने ग्रंथ गहरवाल वंश विटप–(पृष्ठ 19 से 21 पर काव्यात्मक ढ़ंग से किया गया है–)

करनदेव एक नाम सुभट, नृप सैन्यपति बलवारो।
कृष्णदेव (कान्हदेव) सो तनप, अति श्री जयचन्द्र हिपयारों।।
प्यासी है खग खून की, चौहानों की रन से ।
मिटेगी प्यास आज, इनकी, शशि वंशिनि के तन से।।

भगवानदीन सिंह सोमवंशी ने अपने ग्रंथ–'क्षत्रिय वंशार्णव ' के पृष्ठ– 482–483 पर लिखा है कि जिस समय चन्द्रवंशियों की राजधानी झूंसी में थी, उनका राज्य भारद्वाज आश्रम झूंसी एवं अरैल क्षेत्र में फैला था। इन चन्द्रवंशियों का समूह अरैल क्षेत्र में था।, उसने व्याघ्रपद गोत्र अपनाया, जबकि भारद्वाज आश्रम के निकट रहने वाले चन्द्रवंशियों ने भारद्वाज गोत्र अपनाया। यही भरद्वाज गोत्र वंशीय करनदेव के पुत्र कान्हदेव थे। आज भी कान्हदेव के वंशजों का गोत्र भरद्वाज है। तारीख आइने अवध, (डॉ0 राधेशरण सिंह 'विन्धय क्षेत्र का इतिहास' पृष्ठ सं0 24 में संदर्भित)–है कि 'अरैल क्षेत्र के चन्द्रवंशी'(सोमवंशी) नाम से प्रतापगढ़ में बसे'। कन्हपुरिया क्षत्रिय के सम्बन्ध में अंग्रेज डब्लू0सी0 बैनेट ने –'ए रिपोर्ट आन दि फैमिली हिस्ट्री आफ चीफ क्लायन्स रायबरेली डिस्ट्रिक्ट' (1870ई0) में लिखा है कि "अवध के क्षत्रिय राजवंश में कान्हदेव ही ऐसे व्यक्ति थे, जिनकी स्थानीय उत्पत्ति कही जा सकती है, अन्य राजपूत वंश अपनी – अपनी उत्पत्ति राजपूत सरदारों से जोडते हैं, जब कि उनकी उत्पत्ति उसी क्षेत्र की है, जहाँ वे शासन करते थे।"

महाराजा कान्ह

झूँसी का चन्द्रवंशी राजवंश जब विघटित होने लगा तब इस राजवंश के कुछ लोग झूँसी छोड़कर अवध क्षेत्र में चले गये। इसी समय करनदेव कन्नौज आकर महाराज जयचन्द्र गहरवार (1170–1194ई0) की सेना में सेनापति हो गए। करनदेव का विवाह महाराज जयचन्द्र गहरवार की राजपुत्री के साथ हुआ था, जिनसे कान्हदेव नाम के प्रतापी पुत्र का जन्म हुआ। कान्हदेव के नाना राजा मानिक चन्द्र गहरवार ने जन्मोत्सव समारोह मनाया था। इसके उपलक्ष्य में बहुमूल्य रत्नों एवं भूमि को दान दिया। इस अवसर पर जनता द्वारा उपहार स्वरुप स्मारक सिक्के भेंट किये थे। गहरवार अभिलेख में इन सिक्कों को 'कुमार गद्यानक' कहा गया है (वासुदेव उपाध्याय–'प्राचीन 'भारतीय मुद्राऐं)' पृष्ठ संख्या 202)। कान्हदेव की वीरता एवं कूटनीतिज्ञ प्रतिभा के कारण महाराज जयचन्द्र बहुत प्रभा–वित थे, इसी कारण वे कान्हदेव को अत्याधिक स्नेह करते थे।

महाराज जयचन्द्र के राजत्व काल में अवध प्रान्त में भर जाति के छोटे–छोटे राज्य थे, जो जयचन्द्र के अधीन करद शासक के रुप में राज्य करते थे। (लाल अमरेन्द्र सिंह 'बैसवाडा' पृष्ठ 110) भरों ने एक बार भंयकर विद्रोह कर दिया। भरों की बढ़ती शक्ति के दमन हेतु महाराजा जयचन्द्र ने कान्हदेव को अधिकृत किया था। कान्हदेव ने अपनी सेना लेकर भरों पर आक्रमण करके उनके दो प्रमुख किले 'नीमी' और 'गौरा' पर अधिकार कर लिया।

जब महाराजा कान्हदेव मानिकपुर में थे उसी समय उनका विवाह मझौंली (देवरिया) जिले के विसेन राजा की पुत्री के साथ सम्पन्न हुआ। बाद में उनका दूसरा विवाह हाजीपुर राज्य (बिहार) के त्रिलोकचन्दी वैस राजा की पुत्री के साथ हुआ था। कान्हदेव ने दो नगरों की स्थापना की थी। (1) कान्हपुर (सईतट) पर स्थित है। (2) कान्हपुर (गंगा तट) पर । अपना सुदृढ़ राज्य व राजनैतिक स्थिति मजबूत कर लेने के बाद कान्ह देव ने अपने नाम पर एक अन्य कान्हपुर नगर बसाया, जो गंगा के किनारे उ0प्र0 का प्रमुख नगर है। प्रसिद्व पुरातत्ववेत्ता फ्यूहरर ने "मानूमेण्ट्स एन्टीक्स एण्ड इन्सक्रिपसन्स" इन नार्थ वेस्ट प्राविन्सेज" (1890 ई0) में लिखा है कि कान्हदेव के बाद बहुत दिनों तक अर्थात (1890 ई0 तक) उसका नाम "कान्हपुर" ही रहा, किन्तु कालान्तर में 'कान्हपुर' का बिगड़ा नाम कानपुर हो गया ।

महाराजा कान्हदेव के वंशजो द्वारा स्थापित मुख्य राज्य–

प्रतापगढ़– (1) कैथौला (2) उमरार

(3) राजापुर (4) अठेहां

रायबरेली– (1) तिलोई (2) नायन (3) नुरुद्दीनपुर (4) सेमरौता

(5) चन्दापुर (6) सिवान (7) टिकारी (8) शाहमऊ

सुलतानपुर– (1) जामूँ (2) वरवलिया (बरौली)वर्तमान रामगढ़ी

(3) भुवनशाहपुर (4) रेसी (5) कटारी

इन कन्हपुरिया क्षत्रियों के तीनों जिलों में सत्रह राज्य थे। ऐसे प्रतापी पुरुष की स्मृति मे सुलतानपुर जिले में 'राजा कान्ह डिग्री कालेज' जगेसरगंज (जगदीशपुर–जायस मार्ग पर) की स्थापना 9 नवम्बर 2003 ई0 को की गई।